शनि चालीसा

Temples.bio

नीचे दिए गए यूआरएल शनि चालीसा का जाप करना और सुनना सीखें।

www.temples.bio/s-23

|| दोहा ||

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल ।
दीनन के दुख दूर करि, कीजै नाथ निहाल ॥
जय जय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनय महाराज ।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज ॥

जयति जयति शनिदेव दयाला ।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला ॥ 1 ॥
चारि भुजा, तनु श्याम विराजै ।
माथे रतन मुकुट छवि छाजै ॥ 2 ॥

परम विशाल मनोहर भाला ।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला ॥ 3 ॥
कुण्डल श्रवण चमाचम चमके ।
हिये माल मुक्तन मणि दमके ॥ 4 ॥

कर में गदा त्रिशूल कुठारा ।
पल बिच करैं अरिहिं संहारा ॥ 5 ॥
पिंगल, कृष्णों, छाया, नंदन ।
यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख भंजन ॥ 6 ॥

सौरी, मंद, शनि, दश नामा ।
भानु पुत्र पूजहिं सब कामा ॥ 7 ॥
जा पर प्रभु प्रसन्न है जाहिं ।
रंकहुं राव करैंक्षण माहिं ॥ 8 ॥

पर्वतहू तृण होई निहारत ।
तृण हू को पर्वत करि डारत ॥ 9 ॥

Temples.bio

राज मिलत बन रामहिं दीन्हो ।
कैकेइहुं की मति हरि लीन्हों ॥ 10 ॥
बनहूं में मृग कपट दिखाई ।
मातु जानकी गी चतुराई ॥ 11 ॥

लखनहिं शक्ति विकल करि डारा ।
मचिगा दल में हाहाकारा ॥ 12 ॥
रावण की गति-मति बौराई ।
रामचन्द्र सों बैर बढ़ाई ॥ 13 ॥

दियो कीट करि कंचन लंका ।
बजि बजरंग बीर की डंका ॥ 14 ॥
नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा ।
चित्र मयूर निगलि गै हारा ॥ 15 ॥

हार नौलाखा लाग्यो चोरी ।
हाथ पैर डरवायो तोरी ॥ 16 ॥
भारी दशा निकृष्ट दिखायो ।
तेलिहिं घर कोल्हू चलवायो ॥ 17 ॥

विनय राग दीपक महं कीन्होम् ।
तब प्रसन्न प्रभु है सुख दीन्हों ॥ 18 ॥
हरिश्चन्द्र नृप नारि बिकानी ।
आपहुं भरे डोम घर पानी ॥ 19 ॥

तैसे नल परदशा सिरानी ।
भूंजी-मीन कूद गी पानी ॥ 20 ॥

श्री शंकरहि गह्यो जब जाई ।
पार्वती को सती कराई ॥ 21 ॥
तनिक विलोकत ही करि रीसा ।
नभ उडि गयो गौरिसुत सीसा ॥ 22 ॥

पांडव पर भै दशा तुम्हारी ।
बची द्रौपदी होती उघारी ॥ 23 ॥
कौरव के भी गति मति मारयो ।
युद्ध महाभारत करि डारयो ॥ 24 ॥

रवि कहं मुख महं धरि तत्काला ।
लेकर कूदि परयो पाताला ॥ 25 ॥
शेष देव–लखि विनती लाई ।
रवि को मुख ते दियो छुड़ाई ॥ 26 ॥

वाहन प्रभु के सात सुजाना ।
जग दिग्गज गर्दभ मृग स्वाना ॥ 27 ॥
जम्बुक सिंह आदि नखधारी ।
सो फल ज्योतिष कहत पुकारी ॥ 28 ॥

गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं ।
हय ते सुख संपत्ति उपजावैं ॥ 29 ॥
गर्दभ हानि करै बहु काजा ।
गर्दभ सिद्ध कर राज समाजा ॥ 30 ॥

जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै ।
मृग दे कष्ट प्राण संहारै ॥ 31 ॥

जब आवहिं प्रभु स्वान सवारी ।
चोरी आदि होय डर भारी ॥ 32 ॥
तैसहि चारि चरण यह नामा ।
स्वर्ण लौह चांजी अरु तामा ॥ 33 ॥

लौह चरण पर जब प्रभु आवैं ।
धन जन संपत्ति नष्ट करवैं ॥ 34 ॥
समता ताम्र रजत शुभकारी ।
स्वर्ण सर्व सुख मंगलकारी ॥ 35 ॥

जो यह शनि चरित्र नित गावै ।
कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै ॥ 36 ॥
अद्भुत नाथ दिखावैं लीला ।
करैं शत्रु के नशि बलि ढीला ॥ 37 ॥

जो पंडित सुयोग्य बुलवाई ।
विधिवत शनि ग्रह शांति कराई ॥ 38 ॥
पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत ।
दीप दान दै बहु सुख पावत ॥ 39 ॥

कहत रामसुंदर प्रभु दासा ।
शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा ॥ 40 ॥

॥ दोहा ॥

पाठ शनिश्चर देव को, की हों विमल तैयार ।
करत पाठ चालीस दिन, हो भवसागर पार ॥

Temples.bio

नीचे दिए गए यूआरएल शनि चालीसा का जाप करना और सुनना सीखें।
www.temples.bio/s-23